प्रथम सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों ! आज की कहानी में हम जानेंगे कि कैसे स्वामी विवेकानंद जी ने निर्भयता से रास्ते में आई मुश्किल का सामना किया । फिर संस्कृति सुवास में हम जानेंगे कुछ ज्ञानवर्धक बातें ।

"क्या करें क्या न करें" में हम जानेंगे अमावस्या के दिन क्या करें ? फिर मजेदार गतिविधि में हम सीखेंगे कि संस्कृत में रिश्ते कैसे बताएं ? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता, भजन, खेल, योगासन और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे पावन सत्संग ।

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

शिखा स्पर्श : सभी बच्चे शिखा के स्थान पर हाथ लगाकर मंत्र उच्चारण करेंगे -

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ

(हे विश्व के देव ! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर करें, और ब्रह्माण्ड में जो भी कल्याणकारक, शुभ गुण, कर्म, स्वभाव, सुख हैं वो हमें प्राप्त हों ।)

अब सभी बच्चे करेंगे “ॐकार” गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें ।)

3. आओ सुनें कहानी

निर्भयता

बच्चों, एक बार स्वामी विवेकानंद जी वाराणसी में एक मंदिर से लौट रहे थे। रास्ते में बहुत सारे बंदर थे। वे बंदर लोगों को डराते और उनका सामान छीन लेते थे।

जैसे ही स्वामीजी वहाँ से गुजरने लगे, बंदरों का झुंड उनके पीछे दौड़ पड़ा। पहले तो स्वामीजी तेज़ चलने लगे, फिर बंदर और ज़्यादा डराने लगे। तभी पास खड़े एक वृद्ध संन्यासी ने जोर से कहा– “भागो मत! उनका सामना करो!”

यह सुनते ही स्वामीजी तुरंत रुक गए। वे पीछे मुड़े और निर्भय होकर बंदरों की ओर देखने लगे। जैसे ही उन्होंने साहस दिखाया, सारे बंदर धीरे-धीरे पीछे हट गए और भाग गए। इस घटना के बाद स्वामीजी ने कहा–

"जीवन में भय से कभी मत भागो। उसका सामना करो, तभी विजय मिलेगी।"

बाद में वे युवाओं को यही शिक्षा देते थे कि कठिनाइयों और डर से भागने के बजाय साहस के साथ उनका सामना करना चाहिए। यह शिक्षा हिंदू धर्म के उस आदर्श को दर्शाती है जिसमें निर्भयता, आत्मविश्वास और आत्मबल को बहुत महत्व दिया गया है । तो सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - श्री सदगुरुदेव भगवान की जय ।

4. भजन / पाठ

अब हम भजन गायेंगे -

हिम्मत ना हारिये, प्रभु ना विसारिये...

https://youtu.be/aNGFdEGccnc

5. ज्ञान का चुटकुला

टीचर ने फंटू से पूछा: 1869 में क्या हुआ?

फंटू: गांधीजी का जन्म ।

टीचर: बिलकुल सही... बैठ जा ।

टीचर: पप्पू तू बोल... 1872 में क्या हुआ ...?

पप्पू: गांधीजी तीन साल के हो गए... मैं भी बैठु क्या?

टीचर: बाहर निकल ।

सीख : शिक्षक के प्रश्नों का सोच समझ कर जवाब देना चाहिए ।

6. संस्कृति सुवास :-

◆ज्ञान की वृद्धि में सहायक आठ बातें◆

❁विद्या अध्ययन के समय आठ बातें ज्ञान की वृद्धि में सहायक हैं । पहली बात है, शांत रहना। इसके लिए ओऽऽ... म्ऽऽ... का १०-१५ मिनट प्लुत गुंजन करने का अभ्यास करो । शांत रहने से तुम्हारे में मननशक्ति, चिंतनशक्ति विकसित होगी ।

❁दूसरी बात है, इन्द्रियों का संयम जो देखा, बस लपक पड़े, जो आया खा लिया, खड़े-खड़े खा लिया - पानी पी लिया, खड़े-खड़े पेशाब कर लिया... यह जरा-जरा-सी गलती पशुत्व, आसुरीपना ले आती है । इससे मति गति तामसी हो जाती है ।

❁तीसरी बात है, बच्चे दुःखदायी दोषों से बचे रहें । दुःखदायी दोष हैं गंदी फिल्म देखना, गंदी सोहबत (संग) में आना, गंदे कर्म करना । (शेष अगले सप्ताह)

7. क्या करें, क्या नहीं ?

अमावस्या पर क्या करें, क्या नहीं ?

1. जो व्यक्ति अमावस्या को दूसरे का अन्न खाता है उसका महीने भर का पुण्य उस अन्न के स्वामी/दाता को मिल जाता है। (स्कन्द पुराण, प्रभाव खं. 207.11.13)

2. अमावस्या के दिन पेड़-पौधों से फूल-पत्ते, तिनके आदि नहीं तोड़ने चाहिए, इससे " ब्रह्म हत्या " का पाप लगता है ! -विष्णु पुराण

3. अमावस्या के दिन तिल का तेल खाना और लगाना निषिद्ध है। (ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म खंडः 27.29-38)

(शेष अगले सप्ताह)

8. श्लोक :-

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।।

"अपने धर्म (कर्तव्य) का पालन करते हुए मर जाना भी श्रेष्ठ है, लेकिन दूसरे के धर्म (कर्तव्य) का पालन करना भयावह (खतरनाक) है ।"

9. गतिविधि

“संस्कृत में रिश्ते कैसे पूछें ?”

आईये अब सीखते हैं, “संस्कृत में रिश्तों को कैसे पूछें और बतावें । यह सीखने के बाद सभी छात्र दो दो के ग्रुप में

खड़े होकर एक एक दूसरे से संस्कृत में पूछेंगे और उत्तर बताएंगे । संस्कृत में रिश्तों के नाम इस प्रकार हैं-

हिंदी	संस्कृत
पिता	जनकः/तातः
माता	जननी/अम्बा
दादा	पितामहः
दादी	पितामही
नाना	मातामहः
नानी	मातामही
भाई	भ्राता
बहन	भगिनी
चाचा	पितृव्यः
चाची	पितृव्या
मामा	मातुलः
मामी	मातुली
बड़ा भाई	अग्रजः
छोटा भाई	अनुजः

पति	भर्ता
पत्नी	भार्या

10. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है । प्रश्न है,-

" स्वामी विवेकानंद जी के गुरु थे रामकृष्ण परमहंस । तो रामकृष्ण परमहंस जी के गुरु कौन थे?"

A) समर्थ रामदास जी

B) स्वामी रामानंद जी

C) संत रविदास जी

D) संत तोतापुरी जी

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम सभी श्री आशारामायणजी की पंक्तियां दोहराएंगे । https://youtu.be/bl57Gh3T4ps (कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-
एक बार पढ़ें जिंदगी भर याद रहेगा इस Technique से...
https://youtu.be/NPWaZTRYBog

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- स्वामी विवेकानंद जी वाराणसी में एक मंदिर से लौट रहे थे तब कौन उनके पीछे आया ?
- स्वामीजी रुक क्यों गये ?
- स्वामी विवेकानंद जी युवाओं को क्या शिक्षा देते थे ?

- इस कहानी में हिंदू धर्म के किस आदर्श को दर्शाया गया है ?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- ज्ञान बढ़ाने वाली कोई भी दो बाते बताइए ।
- अमावस्या के दिन क्या नहीं करना चाहिए ?
- कौनसे धर्म में मर जाना भी श्रेष्ठ है और कौनसा धर्म दु:ख देनेवाला है ?
- आज के सत्संग से हमको क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहुति

आरती - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

दीपज्योति एवं आरती -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है -

D) संत तोतापुरी जी

****

दूसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका) :-

हरि ॐ बच्चों ! आज की कहानी में हम जानेंगे कि कैसे छत्रपति शिवाजी महाराज की दृढ गुरु-भक्ति से उन्होंने शेरनी का दूध दुह लिया ।

फिर संस्कृति सुवास में हम जानेंगे कुछ ज्ञानवर्धक बातें । "क्या करें क्या न करें" में हम जानेंगे अमावस्या के दिन क्या करें ? फिर मजेदार गतिविधि में हम सीखेंगे कि संस्कृत में रिश्ते कैसे बताएं ? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञानं प्रतियोगिता, कीर्तन, खेल, प्राणायाम, योगासन और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे पावन सत्संग छत्रपति शिवाजी की वीरता की सत्य घटना ।

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क में रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती फुर्ती मे मदद मिलेगी ।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे । त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ, सुनें कहानी :-

छत्रपति शिवाजी महाराज की गुरु-भक्ति

समर्थ रामदास जी के अन्य शिष्य आपसे में बातें करते हुए- "भाई! तुझे नहीं लगता कि गुरुदेव हम सबसे ज्यादा शिवाजी को चाहते हैं?

"हां बंधु! तेरी बात शत -प्रतिशत सच्ची है। लेकिन हम साधारण शिष्य हैं, शिवाजी राजा हैं, छत्रपति हैं, इसीलिए गुरूजी हम सबसे ज्यादा उन पर प्रेम बरसाते हैं । इसमें गलत हीं क्या है। समर्थ रामदास जी ने दोनों की बातें सुन ली और विचार करने लगे - शिष्यों में गुरु प्रेम को लेकर पक्षपात की भावना सही नहीं है, इसका उपाय करना चाहिए । उपदेश से काम नहीं चलेगा, इनको प्रयोग सहित समझाना पड़ेगा ।

एक दिन समर्थ रामदास जी शिष्यों को साथ लेकर जंगल में घूमने गए और घोर जंगल में भीतर तक चले गए । तभी अचानक समर्थ रामदास जी कों पेट में भारी दर्द हुआ और वे पीड़ा से करहने लग गए ।

शिष्यों - गुरुदेव क्या हुआ?

समर्थ - मुझे उदर शूल उठा है, भयंकर पीड़ा हो रही है और ऐसा कह कर एक शिष्य के सहारे वही जमीन पर लेट गए । दूसरा शिष्य पानी पिलाने लगा । अन्य शिष्य आस-पास में कोई आश्रय स्थान ढूंढने गए । थोड़ी दूर पर एक गुफा मिल गई,

शिष्यों के कंधों के सहारे चलते हुए किसी तरह समर्थ उस गुफा में प्रवेश करके जमीन पर लेट गए एवं पीड़ा से कराहने लगे, हाय रे... बड़े जोर से पीड़ा हो रही है, जल्द ही कोई उपाय करो । सहन नहीं हो रहा है ।

शिष्य - गुरुदेव, आप आयुर्वेद के ज्ञाता हैं, आप बताइए ऐसी कौनसी औषधी है जिससे उदर शूल ठीक हो जाये ।

समर्थ रामदास जी ने कहा "इस रोग की एक ही औषधि हैं, लेकिन बड़ी दुर्लभ है, मैं अपने साथ कुछ बूटी लाया हूं, लेकिन उससे शेरनी के दूध में मिलकर पिये तो यह रोग ठीक हो जाये ।

सभी शिष्य एक दूसरे का मुंह ताकने लगे - क्या? शेरनी का दूध? लेकिन उसे लाना माने मौत को निमंत्रण देना है"। शेरनी का दूध कहां से लाएं और कौन लाए ?

शिष्य - हम तो यही बेठ कर गुरुदेव के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते है कि उनका रोग ठीक हो जाये ।

सभी शिष्य डरकर बैठ गए।

उसी समय शिवाजी को अपने गुरुदेव के दर्शन की इच्छा हुई, आश्रम पहुंचने पर उन्हें पता चला कि गुरुदेव तो शिष्यों को साथ लेकर जंगल में गए हैं। अंतः शिवाजी ने समर्थ रामदास जी खोजने जंगल की ओर चल पड़े। देखते ही देखते अंधेरा छा गया जंगली जानवरों की डरावनी आवाज सुनाई पड़ने

लगी । फिर भी शिवाजी घोड़े पर सवार हाथ में मशाल लिए आगे बढ़ते ही रहे । इतने में उन्हें गुरुदेव के कहराने कि आवाज सुनाई दी - अरे भगवान !!....हे राम रमैया!.... मुझे इस पीड़ा से बचाओ।"

यह तो मेरे गुरुदेव की आवाज़ है, अवश्य वह किसी कष्ट में है । शिवाजी बिना विलम्ब किये आवाज़ की दिशा में आगे बढे । शिवाजी घोड़े से उतरे और अपनी तलवार से कटीली झाड़ियों को काटकर रास्ता बनाते हुए आखिर गुफा तक पहुंच ही गए। उन्होंने समर्थ कों पीड़ा से कराहते हुए लोट पोट होते देखा, शिवा की आंखें आंसुओं से झलक उठी । मशाल को एक तरफ रख कर समर्थ के चरणों में गिर पड़े। समर्थ के शरीर को सहलाते हुए शिवाजी ने पूछा 'गुरुदेव ! आपको यह कैसी पीड़ा हो रही है, आप इस घने जंगल में कैसे ? गुरुदेव कृपा करके बताइए ।

समर्थ कराहते हुए बोले - शिवा, तू आ गया बेटा, मेरे पेट में जैसे शूल चुभ रहे हो ऐसी असहाय वेदना हो रही है।

“गुरुदेव आप इस उदर शूल की औषधि भी जानते ही होंगे मुझे औषधि का नाम कहिए?

“शिवा, इस बीमारी का एक ही इलाज है और वह भी अति दुर्लभ है, मैं उस दवा के लिए ही यहां आया था, लेकिन अब तो चला भी नहीं जाता दर्द बढ़ता ही जा रहा है।“

अब शिवा से रहा न गया उन्होंने दृढ़ता पूर्वक कहा ! नहीं गुरुदेव ! शिवा आपकी यातना नहीं देख सकता । आपको स्वस्थ किए बिना मेरी अंतरात्मा शांति से नहीं बैठेगी । मन में जरा भी संकोच रखे बिना मुझे इस रोग की औषधि के बारे में बताएं गुरुदेव, में लेकर आता हूं वह दवा। समर्थ ने कहा- कि इस रोग की एक ही औषधि है, जिसे शेरनी के दूध में बूटी मिलकर बनाया जाता है, लेकिन शेरनी का दूध, उसे लाना माने मौत को निमंत्रण देना ।

गुरुदेव, जिनकी कृपा दृष्टि मात्र से हजारों शिवा तैयार हो सकते हैं ऐसे समर्थ सद्गुरु की सेवा में एक शिवा की कुर्बानी हो भी जाए तो कोई बात नहीं ।"गुरु सेवा करते करते मौत भी आ गई तो मृत्यु भी महोत्सव बन जाएगी"। गुरुदेव आपने ही तो सिखाया है कि आत्मा कभी मरती नहीं, और देह नश्वर है। तो ऐसी देह का मोह कैसा? गुरुदेव! मैं अभी शेरनी का दूध लेकर आता हूं।

शिवाजी गुरु को प्रणाम कर के पास में पड़ा हुआ कमंडलु लेकर चल पड़े । क्या होगा ? कैसे मिलेगा ? अथवा ला सकूंगा या नहीं, ऐसा विचार सिवा ने नहीं किया? सतशिष्य की कसौटी करने के लिए प्रकृति ने भी मानो कमर कसी और आंधी तूफान के साथ जोरदार बारिश शुरु हुई, बरसते पानी में शिवाजी दृढ़ विश्वास के साथ चल पड़े शेरनी को ढूंढने । जंगल

में बहुत दूर जाने पर शिवा को अंधेरे में चमकती हुई चार आंखें दिखी शिवा उनकी और आगे, वो शेरनी के बच्चे थे, छोटे शावक. शिवा ने विचार किया, बच्चे यहाँ है तो इनकी माँ शेरनी भी आसपास ही है ।

शिवाजी प्रसन्न थे।मौत के पास जाने में प्रसन्न! एक सतशिष्य के लिए उसके सद्गुरु की प्रसन्नता से बड़ी चीज संसार में और क्या हो सकती है। इसीलिए शिवाजी प्रसन्न थे, वो इधर उधर शेरनी को ढूंढने लगे. इतने में शेरनी ने झाड़ियों के पीछे से शिवाजी पर छलांग लगाई परंतु कुशल योद्धा शिवाजी ने अपने को शेरनी के पंजे से बचा लिया, फिर भी उनकी गर्दन पर शेरनी के नाख़ून की खरोंच लग गई।

शेरनी क्रोध से गुर्रा रही थी । परंतु शिवा का निश्चय अटल था, उन्होंने हथियार नीचे रखा और घुटनों के बल बेठ गए और शेरनी से प्रार्थना करने लगे कि हे माता ! मैं तेरे बच्चों को अथवा तेरा कुछ बिगाड़ने नहीं आया हूं, मेरे गुरुदेव को हो रहे उदर शूल में तेरा दूध एकमात्र इलाज है । हे माता! मुझे मेरे सतगुरु की सेवा करने दे, तेरा दूध दुहने दे । शिवाजी की प्रार्थना से एक महान आश्चर्य घटा, शिवाजी के रक्त की प्यासी शेरनी उनके आगे गाय के जैसे सीधी बन गई ।

शिवाजी ने शेरनी के शरीर पर प्रेमपूर्वक हाथ फेरा और उसका दूध निकालने लगे । पशु भी प्रेम की भाषा

समझते है । शिवाजी की प्रेम पूर्वक प्रार्थना का कितना प्रभाव ! दूध लेकर शिवा गुफा में आए, समर्थ ने कहा - शिवा, तू आ गया, शेरनी का दूध मिला और ये तेरी गर्दन पर खून कैसे? गुरुदेव आपकी कृपा से एक शेरनी मेरे लिए गाय जैसी हो गई । इस कमंडल में शेरनी का ही दूध है, शीघ्र इसमें बूटी मिलकर पिए, ताकि आपका दर्द ठीक हो जाये ।

गुरुदेव - मेरा उदर शूल तो उसी समय अपने आप शांत हो गया था, जब तू निश्चय करके शेरनी का दूध लेने गया था । जिसका शिष्य गुरुसेवा में अपने जीवन की बाजी लगा दे, उसके गुरु को कैसी पीड़ा ? ऐसा कहकर समर्थ ने अन्य शिष्यों की तरफ अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा ।

गुरुदेव शिवाजी को क्यों चाहते हैं??

शिष्यों भी यह रहस्य समझ में आ गया कि गुरुदेव शिवाजी को अधिक प्रेम करते है और उनको यह शिक्षा देने के लिए ही गुरुदेव ने उदर शूल की लीला की थी । अपने सद्गुरु की प्रसन्नता के लिए अपने प्राणों तक को बलिदान करने का सामर्थ्य रखने वाले शिवाजी धन्य है । सभी बच्चे जोर से बोलेंगे श्री सदगुरुदेव भगवान की जय....

4. ज्ञान का चुटकुला :

चिंटू ओर पप्पू स्कूल से घर जाते समय -

पप्पू - इस बार 'टीचरस डे' पर मैं मेथ्स के सर को चश्मा गिफ्ट करूँगा ।

चिंटू - लेकिन मेथ्स के सर तो चश्मा लगाते ही नहीं है ।

पप्पू - हां, लेकिन मैं उन्हें हमेशा गधा ही दिखता हूं ।

सीख : मेथ्स एकाग्रता का विषय है, एकाग्रता से विद्याअध्यन करना चाहिए ।

5. सुविचार :-

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।"

अर्थ: उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए ।

6. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की ।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है,- "शिवाजी ने सर्वप्रथम कौन सा किला जीता था?"

विकल्प है -

(A) तोरणा किला

(B) राजगढ़ किला

(C) प्रतापगढ़ किला

(D) बीजापुर किला

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

7. क्या करें, क्या नहीं ?

अमावस्या के दिन क्या करें, क्या नहीं ?

4. जमीन है अपनी... खेती का काम करते हैं तो अमावस्या के दिन खेती का काम न करें, न मजदूर से करवाएं ।

5. जप करें, भगवत गीता का ७ वां अध्याय अमावस्या को पढ़ें और उस पाठ का पुण्य अपने पितृ को अर्पण करें । सूर्य को अर्घ्य दें और प्रार्थना करें, आज जो मैंने पाठ किया ...अमावस्या के दिन, मेरे घर में जो गुजर गए हैं, उनको उसका पुण्य मिल

जाए । " तो उनका आर्शीवाद हमें मिलेगा और घर में सुख-सम्पति बढ़ेगी ।

6. कर्जा हो गया है तो, अमावस्या के दूसरे दिन से पूनम तक रोज रात को चन्द्रमा को अर्घ्य दें, समृद्धि बढ़ेगी ।

8. गतिविधि :-

"संस्कृत में परिचय कैसे देंवें"-

संस्कृत में रिश्ते यदि पुरुष होते हैं तो यह को "एष:" बोलते है, और यदि स्त्रीलिंग होते हैं । तो यह को "एषा:" बोलते है जैसे -

हिंदी	संस्कृत
यह मेरे पिता है	एष: मम पिता अस्ति l
यह मेरी माता है	एषा मम माता अस्ति l
यह मेरा भाई है	एष: मम भ्राता अस्ति l
यह मेरी बहन है	एषा मम भगिनी अस्ति l
यह मेरे दादा हैं	एष: मम पितामह अस्ति l
यह मेरी दादी है	एषा मम पितामही अस्ति l

यह मेरे चाचा हैं	एष: मम पितृव्य: अस्ति l
यह मेरी चाची है	एषा मम पितृव्या अस्ति l
यह मेरे मामा है	एष: मम मातुल: अस्ति l

9) भजन :-

अब सभी बच्चे गाएंगे भजन -

स्नेह - प्यार की तुमसे गुरुवर, बाँधी है प्रीत की डोर... !!

https://youtu.be/KtWWJkFptB4

10) संस्कृति सुवास :-

◆ज्ञान की वृद्धि में सहायक आठ बातें◆

(गतांक से आगे)

◈चौथी बात है, सदाचरण करे ।

◈पाँचवीं बात, ब्रह्मचर्य का पालन करे । (आश्रम की दिव्य प्रेरणा प्रकाश पुस्तक पढ़ने से सफल होंगे ।)

◈छठी बात, आसक्ति न रखे ।

❁सातवीं बात, सत्य बोले ।

❁आठवीं बात है, सहनशक्ति बढ़ावे । माँ ने कुछ कह दिया तो कोई बात नहीं, माँ है न ! पिता ने या शिक्षक ने कुछ कह दिया तो रूठना नहीं चाहिए, मुँह सुजाना नहीं चाहिए ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम सुनेंगे पूज्य बापूजी की अमृतमयी वाणी ...

छत्रपति शिवाजी की वीरता की सत्य घटना

https://youtu.be/zQGt2gWjIWU

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- समर्थ रामदास जी शिष्यों को लेकर घोर जंगल में क्यों गए ?
- समर्थ रामदास जी ने शिष्यों को शेरनी का ही दूध लाने के लिए क्यों कहा?
- शिवाजी शेरनी का दूध कैसे निकल पाए?
- शिष्यों भी यह रहस्य क्या समझ में आ गया?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
- ज्ञान बढ़ानेवाली कोई भी दो बातें बताइए ।
- अमावस्या के दिन क्या नहीं करना चाहिए?
- आज के सत्संग से हमको क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति :-

<u>दीपज्योति एवं आरती</u>

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।

अ. शिवाजी ने मात्र 19 वर्ष की आयु में सर्वप्रथम तोरणा किला किला जीता था ।

****